

विचार बिन्दु

कोयल दिव्य आम रस पीकर भी अभिमान नहीं करती, लेकिन मंडक कीचड़ का पानी पीकर भी टरने लगता है। -प्रसंग रत्नावली

बाजार और साहित्य - नए प्रयोग पुराने आलाप

आज कल साहित्य की दुनिया ने भी ओटीटी जैसे प्लेटफॉर्म पर अपना अड्डा बना लिया है। इस प्लेटफॉर्म का नारा है 'खुल' कर लिखो और जम कर बिको। यहां का खुलना ओटीटी की नायिकाओं के अति खुलेपन को टक्कर देता दिखाई देगा। दरअसल आज साहित्य की दुनिया में दो तरह के लेखक, कवि हैं एक वे जो परम्परावाद की पूंछ पर लटकते हैं। वे लिखें जा रहे हैं बेस्वाद बेमतलब। कोई उनसे पूछे भाई जी, मैडम साहिबा क्यों लिख रहे हैं जब कोई आपको घास ही नहीं डाल रहा, कोई आपको बांच भी नहीं रहा तो वे यकायक दार्शनिक मुद्रा ओढ़ कर कहेंगे स्वान्तःसुखाया रघुनाथ गथा कीजिए। फिर वे घुमाफिरा कर युवा लेखकों, मीडिया हाउसों और अकादमियों पर अपनी भद्रास निकालते दिखेंगे। दूसरे वे लेखक हैं जो बाजार की नब्ब पकड़ कर रखते हैं और उसकी धुनो पर अपनी लेखनी को बैली डांस कराते हैं। वे अपने लेखन को जब एक मुकमल मुकाम तक ले जाते हैं तब बाकायदा एक मार्केटिंग टीम और मीडिया मैनेजरों के जरिए अपने लेखन को पहुंच बनाते हैं। यह सब सुनियोजित होता है यहां आधुनिकताम तर्कों के उपयोग की टीम लगी होती है, वे अपने फालोवर्स को करोड़ों तक पहुंचा रहे हैं। यहीं से वे सक्षम सामर्थ्य हासिल कर बाजार का दोहन करना सीख जाते हैं। यहां नैतिकता, सामाजिक मूल्य, धर्म और विज्ञान उतना ही दिखेगा जितना पैकेज की बिक्री के लिए जरूरी है। पुराने लेखक अपने लेखन से पैसे कमाने की सोच भी नहीं सकते। हां वे रात-दिन पुस्तकारों, सम्मानों और सदरतों का रोना रोते जरूर दिख जाएंगे। वे हर पुस्तकार और सम्मान की घोषणा के साथ कर्ण कुन्दन में तब्दील हो जाता है और अन्त में एक दूसरे की बांहों की आस्तीनों से अपने आंसू पौछ लेते हैं। जो इन सब मायावी चीजों से परे होने का दिखावा करते हैं वे आत्म प्रवचना से मुग्ध हो कर कोऊ नूप भये की तान पर मगन दिखेंगे। बहुत से पुराने लेखक आज भी ओल्ड इज गोल्ड की तरह चमकदार हैं लेकिन वे अंगुलियों पर गिनेने योग्य ही हैं। वैसे आपको हर शहर में गिने-गिनाए छंटे-छंटाए वे ही सौ-पचास चेहरे हर साहित्यिक आयोजन की शोभा बढ़ाते दिखेंगे, अरे भाई और लोग कहाँ हैं उन्हें भी तो आगे लाओ। वैसे भी आज अधिकांश साहित्यकार अपने पैसों से छपाकर किताबें परोस रहे हैं तो उनका दर तो समझा ही जा सकता है। आज पूरे देश में ऐसे सौ साहित्यकार भी नहीं हैं जिनकी सालभर में दस हजार किताबों का एडिशन बिकता हो।

युवा लेखकों ने प्रिन्ट की लीक तोड़कर इंटरनेट की दुनिया में अपना मुकाम बनाया है वे हिन्दी के लेखक भी हैं। ऐसे नायक नए तौर तरीकों से सज-धज कर बाजार में हाजिर हैं। वेबदुनिया में वे अपने लिए एक मुकमल फोलोवर्स लेकर बहुत आगे निकल चुके हैं। उनके अपने पाठकास्ट हैं, अपने फेसबुक पेज हैं और अपने ही समीक्षक और प्रसंशक हैं। कुल मिलाकर वे नित नया खोज परख और सनसनीखेज परोसते हैं तथा जमकर धन कूट रहे हैं। अपने फेसबुक पेज हैं और अपने ही समीक्षक और प्रसंशक हैं। कुल मिलाकर वे नित नया खोज परख और सनसनीखेज परोसते हैं तथा जमकर धन कूट रहे हैं।

हाट रेसीपी वाले बाजार में। यहां हिंदी की बिंदी केवल साज सज्जा बतौर मिलती है। हर बड़े शहर में अब ये साहित्य की सजावटी मण्डियां खूब फल-फूल रही हैं। इनकी तर्ज पर छोटे शहरों कस्बों में भी साहित्य के जमावड़े होने लगे हैं। इन छोटे मेलों खेलों को कुछ मशहूर होने के ख्वाहिशमंद अपने पुरखों को वैतरणी पार कराने के नाम पर अपने संसाधन लगा कर दो-चार साल भ्रमणा जुटाते हैं फिर वे भी राम-राम कह देते हैं। वहीं कुछ झोलाछाप लेखक नारायण नारायण करते चंदा चिड़ा इक्कड़ा कर थोडा सा चंदन आने वाले मेहमानों की लगाकर शेष चंदनी रात में उडाते हैं। यहां भी चन्द गम्भीर और दिखावे से दूर लोग बड़े जतन से बेहतरीन काम कर रहे हैं उन्हें सौ-सौ सालामा। बड़े शहरों के साहित्यिक मजमों का मौसम अक्टूबर से फरवरी के बीच होता है। फिरफरते फरटिएर युवक-युवतियां आपको इन बड़े जलसों में फैशन परेड करते हुए लहराते मिलेंगे। यहां बाजार साहित्य को क्लासिक ढंग से परोसकर बेचता है। नामचीन लोगों को युलाकर सनसनी फैलाने और शिवादी को हवा देते वक्तव्यों की फसलें काटी जाती हैं। किताबों के बीच कला संस्कृति को सलीके से बेचा जाता है। यहां भी परम्परावादी लेखकों का रोना, ये कैसे उत्सव हम स्थापित स्थानीय लेखकों को छोड़कर बाहर वालों की बहार हमसे एंटी के भी पैसे वसूल रहा है।

ऐसे चन्द नामचीन साहित्य महोत्सवों में शामिल हैं- शब्दों की घाटी, देहरादून, बैंगलोर साहित्य महोत्सव, एपीजे कोलकाता साहित्य महोत्सव और जयपुर साहित्य महोत्सव। हिन्दी साहित्य प्रेमियों को शायद इससे प्रेरणा मिले कि अंग्रेजी के मशहूर लेखक खुशवंत सिंह साहित्य महोत्सव, खुशवंत सिंह के नाम पर होता है। इस साहित्यिक उत्सव की शुरुआत 2012 में हुई थी और यह हर साल अक्टूबर में आयोजित होता है। इस उत्सव का आधार कसौली की खूबसूरत पहाड़ियों में है, जहाँ उनका अधिकांश काम हुआ था, और इसलिए यह उनकी विरासत के लिए एक उपयुक्त श्रद्धांजलि के रूप में कार्य करता है।

आजकल सरकारी साहित्य महोत्सवों की भी धूम शुरू है। ये आयोजन जैसी केन्द्र या राज्य सरकार वैसे उसकी तर्ज पर हो रहे हैं। वैसे वाद वैसे ही संवाद और फिर सार्वजनिक विवाद। आजकल का फार्मूला है फैलाओ विवाद और हासिल कर लो लोकप्रियता। तो साहेब साहित्य, राजनीति, अर्थतंत्र, मीडिया और फैशन के चौपालें पर खडा होकर विचरण कर रहा है होशियार लोग इसे गांठ रहे हैं, कुंठित मण्डली हांफ रही है।

-अतिथि संपादक,
राजेन्द्र मोहन शर्मा,
अतिथि संपादक साहित्यकार, शिक्षाविद एवं चिन्तक

राशिफल शनिवार 18 जनवरी, 2025

माघ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत् 2081, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 2:51 तक, शोभन योग रात्रि 1:16 तक, कौलव करण सायं 6:31 तक, चन्द्रमा रात्रि 9:28 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज विवाह मुहूर्त उत्तरा फाल्गुनी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:40 से 9:54 तक, चर 12:37 से 1:56 तक, लाभ-अमृत 1:56 से 4:34 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:53

मेघ	सिंह	धनु
व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शोभा/सुगमता से बने लगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आज महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।	मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है। मन:स्थिति में सुधार होगा। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बने लगे। नैकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।	व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।
वृष	कन्या	मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आमंत्रण रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। आज मन में असंतोष बना रहेगा।	अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बने कार्य विगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विचर्य हो सकता है। आज यात्रा में परेशानी हो सकती है।
मिथुन	तुला	कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।	आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।	परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।
कर्क	वृश्चिक	मीन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।	व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शोभा/सुगमता से बने लगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।	स्वास्थ्य में सुधार होगा। दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बचा हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है।

मादक पदार्थों का अवैध कारोबार देश के लिए चुनौती



बाल मुकुन्द ओझा

मादक पदार्थ विरोधी अभियान के तहत देश के विभिन्न शहरों में बड़ी मात्रा में ड्रग्स के जब्त किये जाने से एक ओर जहां नशे के सौदागरों को यह संदेश है कि उनके अवैध कारोबार को खत्म किया जाएगा, वहीं सरकार की इस प्रतिबद्धता का परिचायक भी कि वह अपने नशा उन्मूलन अभियान को लेकर दृढ़ है। पिछले कुछ वर्षों में तस्करी के जरिये लागू गए नशीले पदार्थों की बड़ी-बड़ी खेप बरामद की गई है और इन पदार्थों का कारोबार करने वालों की गिरफ्तारियां भी की गई हैं, लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि जो लोग भारत में नशीले पदार्थ भेज रहे हैं, उनके हाँसेले पूरी तौर पर

पस्त हुए हैं। बड़ी मात्रा में नशीले पदार्थों की जवती से यह स्पष्ट होता है कि ऐसे उपाय करने की आवश्यकता है, जिससे भारत में नशीले पदार्थ आ ही न सकें। इसके लिए सीमाओं पर चौकसी बढ़ानी होगी और नशीले पदार्थों को तस्करी करने वालों पर शिकंजा भी कसना होगा। ऐसे तत्व देश के भीतर भी सक्रिय हैं और बाहर भी।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मुताबिक वर्ष 2024 में देशभर के पुलिस बलों और को 16,914 करोड़ रूपए मूल्य को ड्रग्स जब्त करने में सफलता मिली है, जो आजादी के बाद का सबसे बड़ा आंकड़ा है। गृह मंत्री का बयान यह साबित करता है कि सरकार की लाख चेष्टा के बावजूद नशे का व्यापार देश में अनवरत चालू है। गृह मंत्री का कहना है, भारत में पिछले 10 सालों में ड्रग्स के खिलाफ अपनी लड़ाई को काफी मजबूत किया है और इस दिशा में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। उन्होंने बताया कि 2004 से 2014 के बीच लगभग 3 लाख 63 हजार किलो ड्रग्स जब्त किए गए थे, जबकि पिछले 10 वर्षों में यह आंकड़ा बढ़कर 24 लाख किलो तक पहुंच गया है, जो कि सात गुना अधिक है। ड्रग्स की कीमत की बात करें, तो 2004-2014 में जब्त किए गए ड्रग्स का मूल्य लगभग 8,150 करोड़ रुपये था, जो 2014-2024 में बढ़कर 56,851 करोड़ रुपये हो गया है, यानी यह आठ गुना

बढ़ा है। भारत में 7 फीसदी लोग गैरकानूनी रूप से ड्रग्स लेते हैं।

देशभर में प्रतिदिन लाखों-करोड़ों की ड्रग्स पकड़ी जा रही है मगर बजाय धमने के यह कारोबार लगातार बढ़ता ही जा रहा है। सरकार की सख्ती के बावजूद नशे के तस्करी अपनी कारगुजारियों से बाज नहीं आ रहे हैं क्योंकि इस धंधे में उन्हें अंधी कमाई हो रही है। नशीले पदार्थों की बड़ी खेप पकड़े जाने से एक ओर जहां यह स्पष्ट होता है कि भारतीय एजेंसियां नशे के कारोबारियों के खिलाफ सजग और सक्रिय हैं, वहीं दूसरी ओर यह भी रेखांकित होता है कि ड्रग्स के सौदागर भारत को मादक पदार्थ खपाने का जरिया बना रहे हैं या फिर उसे यहां लाकर अन्यत्र भेजना आसान पा रहे हैं।

नशा समाज की रंगों में प्रवेश कर चुका है, जिसके व्यापक नेटवर्क को आम लोगों के सहयोग से ध्वस्त किया जा सकता है। नशा एक ऐसी बुराई है, जिसमें मानव का जीवन समय से पहले ही अंधकार और मौत की राह पर चला जाता है। नशाखोरी क्या है? एक खतरनाक बीमारी जिसके क्षणिक सुख के चलते ईंसान अपनी जिंदगी से हाथ धो बैदता है। यह केवल एक बीमारी नहीं है बल्कि यह अनेक रोगों की जननी भी है।

नशा मनुष्य को अपराध की ओर ले जाता है जो शांतिपूर्ण समाज के लिए अभिशाप का जहर है। दुनिया की सबसे

बड़ी युवा आबादी वाला देश भारत है। युवा नशे के मकड़जाल में फँसकर बर्बादी के कगार पर पहुंच रहे हैं। इससे उनकी संवेत तो खराब हो ही रही है साथ ही उनका सामाजिक स्तर भी गिरता जा रहा है। नशे का कारोबार बहुत तेजी से फैल रहा है, जिसमें देश-दुनिया के बड़े रिकेट शामिल हैं। एक अनुमान के मुताबिक हर साल गाँजा, चरस, अफीम, ड्रग्स, ब्राउन शुगर, हेरोइन, डेडवूड से अरबों रुपये का कारोबार पड़े के पीछे से ड्रग तस्करी करते हैं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो नशे का सामान चाय पान की थडियों, मंडिकल स्टोर्स और शिक्षण संस्थानों के आसपास आसानी से उपलब्ध हो जाता है। सुनसान रास्ते व खंडहर इमारतें नशा करने वाले बच्चों व युवाओं के विशेष अड्डे हैं।

नशाखोरी की आदत 12 से 20 साल तक के युवाओं में अधिक देखने को मिल रही है। इससे आने वाली पीढ़ी के भविष्य पर संकटों के बादल मंडराने लगे हैं। नशे का आदी व्यक्ति समाज की नशा का सामान आज घड़ल्ले से बिक रहा है। मनोचिकित्सकों का कहना है कि युवाओं में नशे के बढ़ते चलन के पीछे आधुनिकता की चकाचौंध भरी बदलती जीवन शैली, परिवार से विभिन्न प्रकार के दबाव, परिवारिक झगड़े, इंटरनेट की अत्यधिक लत, एकाकी जीवन, परिवार से दूर रहने, पारिवारिक कलह जैसे अनेक कारण हो सकते हैं। नशा, नाश का मूल है। यह स्वास्थ्य और

सामाजिक प्रतिष्ठा को क्षय करता है।

तमाम बर्दियों के बावजूद ड्रग्स का कारोबार फल-फूल रहा है और युवाओं के साथ ही अब वह स्कूली छात्रों को भी निशाना बना रहा है। नशे का धंधा तेजी से बढ़ रहा है और वजाह से ज्यादा से ज्यादा मुनाफा अपने फायदे के लिए युवाओं को नशे की लत लगाई जा रही है। फिर चाहे नशा शराब का हो शबाब का हो या फिर नशीली ड्रग्स का। नशे के रूप में लोग शराब, गाँजा, जर्दा, ब्राउन शुगर, कोकोन, स्मैक आदि मादक पदार्थों का प्रयोग करते हैं, जो स्वास्थ्य के साथ सामाजिक और आर्थिक दोनों लिहाज से ठीक नहीं हैं। नशे का आदी व्यक्ति समाज की दृष्टि से हेय हो जाता है, और उसकी सामाजिक क्रियाशीलता जीरो हो जाती है, फिर भी वह व्यसन को नहीं छोड़ता है।

धूम्रपान से फेफड़े में कैंसर होता है, वहीं कोकोन, चरस, अफीम लोगों में उतेजना बढ़ाने का काम करती है, जिससे समाज में अपराध और गैरकानूनी हरकतों को बढ़ावा मिलता है। इन नशीली वस्तुओं के उपयोग से व्यक्ति पागल और सुतावस्था में चला जाता है। तन्हाकू के सेवन से तपेदिक, निमोनिया, साँस की बीमारियाँ का सामना करना पड़ता है। इसके सेवन से जन और धन दोनों की हानि होती है।

-बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

प्रदेशभर में हिंदी मीडियम के 260 सरकारी स्कूल बंद किये

बीकानेर, (निर्स)। राज्य सरकार ने पिछले 10 दिनों में 450 सरकारी स्कूलों को बंद कर दिया है। माध्यमिक शिक्षा निदेशक आशीष मोदी ने देर रात प्रदेशभर में 260 सरकारी स्कूल बंद को का आदेश निकाला। करीब 10 दिन पहले ही 190 स्कूलों को बंद किया गया था। बंद किए गए सभी स्कूल हिंदी मीडियम के हैं। वहीं बीकानेर में भाजपा विधायक के घर के सामने स्थित गर्ल्स स्कूल को भी बंद कर दिया गया है। इस स्कूल को कम छात्र संख्या बताते हुए बंद कर बाँयण स्कूल में मर्ज किया गया है, जबकि यहां करीब 300 छात्राएं पढ़ रही हैं। बंद किए गए 260 स्कूलों में से 14 स्कूल सीनियर सेकेंडरी स्कूल हैं, जहां बच्चों का नामांकन कम है। इन

स्कूलों को बंद कर पास के दूसरे स्कूल में मर्ज किया गया है। इनमें जयपुर, अजमेर, पाली, ब्यावर, बीकानेर, हनुमानगढ़, उदयपुर और जोधपुर के स्कूल शामिल हैं। 9 प्राइमरी और अपर प्राइमरी तक के ऐसे स्कूल बंद किए गए हैं, जो सीनियर सेकेंडरी स्कूल के भवन या उनके पास में संचालित हो रहे थे। इन स्कूलों को सीनियर सेकेंडरी स्कूल में मर्ज किया गया है। इनमें जालोर, अजमेर, बीकानेर, हनुमानगढ़, जोधपुर और डूंगरपुर के स्कूल शामिल हैं। जयपुर के 2 प्राइमरी स्कूलों को पास के सीनियर सेकेंडरी स्कूल में मर्ज किया गया है। इन प्राइमरी स्कूलों में बच्चों का नामांकन कम था। प्रदेश के 200 प्राइमरी और अपर प्राइमरी स्कूल को जोरो छात्र संख्या के

■ बीकानेर में भाजपा विधायक के घर के सामने गर्ल्स स्कूल मर्ज, यहां 300 छात्राएं पढ़ रही हैं

कारण बंद किया गया है। इन स्कूलों को पास के ही सेकेंडरी और सीनियर सेकेंडरी स्कूल में मर्ज किया गया है। इसमें अजमेर, ब्यावर, बारा, बाड़मेर, नीलवाड़ा, बीकानेर, चित्तौड़गढ़, चूरू, दौसा, धौलपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, जालोर, शालावाड़, झुंझुन, जौधपुर, फलोदी, करौली, कोटा,

डीडवाना-कुचामन, नागौर, पाली, प्रतापगढ़, राजसमंद, सीकर, सिराही, उदयपुर, सलूवर के स्कूल बंद किए गए हैं। इसके अलावा प्राथमिक शिक्षा के 35 ऐसे स्कूलों को भी बंद कर दिया गया है, जहां छात्रों की नामांकन संख्या कम है। इन स्कूलों को पास के सीनियर सेकेंडरी स्कूल में मर्ज किया गया है। इनमें अजमेर, ब्यावर, बारा, बाड़मेर, नीलवाड़ा, बीकानेर, चित्तौड़गढ़, चूरू, दौसा, धौलपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, जालोर, शालावाड़, झुंझुन, जौधपुर, फलोदी, करौली, कोटा,

सरकारी बालिका सीनियर सेकेंडरी स्कूल को भी बंद कर दिया गया है। इस स्कूल को कम छात्र संख्या बताते हुए बंद किया गया है, जबकि यहां करीब 300 छात्राएं पढ़ रही हैं। क्षेत्र के लोगों ने अब अंशुमान सिंह और उनके दादा पूर्व विधायक बंटी सिंह भाटी के सामने इस मुद्दे को रखा है। इस स्कूल को अब इसी परिसर में चलने वाली बाँयण स्कूल में मर्ज किया गया है। सरकार ने पिछले दिनों मंत्रियों को एक कमेट्री बनाकर अंग्रेजी माध्यम के महात्मा गांधी स्कूलों की समीक्षा शुरू की थी। इन मंत्रियों की कमेट्री ने अब तक कोई सिफारिश नहीं की है। ऐसे में राज्यभर में एक भी अंग्रेजी मीडियम स्कूल बंद नहीं हुई है, जबकि हिंदी मीडियम के 450 स्कूल बंद हो गए हैं।

जम्मूतवी में कार्य के चलते 13 ट्रेनों के कुछ फेरे निरस्त किये

कोटा, (निर्स)। जम्मूतवी स्टेशन पर पुनर्विकास कार्य के लिए जम्मूतवी याई में दिनांक 15 जनवरी से 06 मार्च तक नान इंटरलॉकिंग कार्य के कारण कोटा से एवं कोटा होकर संचालित होने वाली 13 गाड़ियों के कुछ फेरे निरस्त किए गए हैं। गाड़ी संख्या 12941 इंद्रौर-माटियर कैप्टन तुषार महाजन (उधमपुर) एक्सप्रेस 20, 27 जनवरी, 03, 10, 17, 24 फरवरी एवं 03 मार्च को निरस्त रहेगी।

गाड़ी संख्या 22942 माटियर कैप्टन तुषार महाजन (उधमपुर)-इंद्रौर एक्सप्रेस 22, 29 जनवरी, 05, 12, 19, 26 फरवरी एवं 05 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 20985 कोटा-माटियर कैप्टन तुषार महाजन (उधमपुर) एक्सप्रेस 22, 29 जनवरी, 05, 12, 19, 26 फरवरी एवं 05 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 20986 माटियर कैप्टन तुषार महाजन (उधमपुर)-कोटा एक्सप्रेस 23, 30 जनवरी, 06, 13, 20, 27 फरवरी एवं 06 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 19803 कोटा-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस 18, 25 जनवरी, 01, 08, 15, 22 फरवरी एवं 01 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 19804 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कोटा एक्सप्रेस 19, 26

जनवरी, 02, 09, 16, 23 फरवरी एवं 02 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 12471 बांद्रा टर्मिनल-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस 02 एवं 03 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 12472 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-बांद्रा टर्मिनल एक्सप्रेस 04, 05 एवं 07 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 12475 हापा-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस 04 मार्च को निरस्त रहेगी।

गाड़ी संख्या 12476 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-हापा एक्सप्रेस 03 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 12477 जामनगर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस 05 मार्च निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 12474 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-गांधीधाम सर्वोदय एक्सप्रेस 06 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 12473 गांधीधाम-श्री माता वैष्णो देवी कटरा सर्वोदय एक्सप्रेस 01 मार्च को निरस्त रहेगी। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ जैन ने बताया कि इस संबंध में सर्व-संबंधित स्टेशनों और कर्मचारियों को निर्देशित किया गया है। यात्रियों से अनुरोध किया है कि असुविधा से बचने के लिए उक्त ट्रेन की उचित जानकारी स्टेशन, रेल मूद 139 अथवा ऑनलाइन प्राप्त कर यात्रा करें।

सड़क दुर्घटना मामले में 53.81 लाख रुपये का अवाई पारित

अक्टूबर 2020 के मामले में अवाई पारित

तारानगर, (निर्स)। न्यायालय मोटर दुर्घटना दावाधिकरण के तारानगर पीठासीन अधिकारी संतोष कुमार मीणा ने सड़क दुर्घटना मामले में कुल 53.81 लाख रुपये का अवाई पारित किया।

पीड़ित पक्ष की तरफ से पैरवी कर रहे अधिवक्ता अनिल कुमार स्वामी राजपुरा ने बताया कि 19 अक्टूबर 2020 को गांव ढाणा पट्टा सारुलु निवासी संजय पुत्र ओमप्रकाश व मंगीलाल पुत्र गोपीराम मोटरसाइकिल से ढाणा भाकरान से तारानगर आ रहे थे तो ढाणा भाकरान अड्डा पास पहुंचते तो गांव के ही सुरेश पुत्र मनफुल, विक्रम पुत्र ओमप्रकाश सड़क को साइड में खड़े थे। इन दोनों को देखकर संजय व मंगीलाल भी अपनी मोटरसाइकिल को रोककर साइड में खड़े होकर चारों आपस में बात कर रहे थे।

इतने में ही तारानगर की तरफ से टुक का चालक लिखभाराम मेघवाल निवासी बाड़मेर ने टुक को तेज गति व लापरवाही से चलाकर साइड में खड़े चारों लड़कों के टक्कर मारी, जिससे चारों लड़के गम्भीर रूप से घायल हो

गये। पालेरी की तरफ से आ रही बोलेरो गाड़ी में सबार व्यक्तिनों ने चारों लड़कों को बोलेरो में डालकर सरकारी अस्पताल तारानगर लेकर आये, जहां डॉक्टरों ने सभी को मृत घोषित कर दिया।

उक्त दुर्घटना का मुकदमा तिलोकामरा पुत्र ओमप्रकाश जाट ने पुलिस थाना तारानगर में दर्ज करवाया। पुलिस ने अनुसंधान कर टुक चालक के खिलाफ न्यायालय में चालाना पेश किया। सभी मृतकों की ओर से उनके माता-पिता की ओर से न्यायालय में क्लेम याचिका पेश की। पीठासीन अधिकारी संतोष कुमार मीणा ने पत्रावलियों का अवलोकन कर पत्रावली पर सभी का देखकर संजय व मंगीलाल भी मनफुल आदि के पक्ष में 13.47 लाख रुपये, प्रार्थीया गुड्डा आदि के पक्ष में 13.47 लाख रुपये, गोपीराम आदि 13.99 लाख रुपये, प्रार्थी ओमप्रकाश के पक्ष में 12.86 लाख रुपये का अवाई पारित कर अग्रार्थी बीमा कम्पनी को कुल राशि मध्य ब्याज 53.81 लाख रुपये अदा करने का आदेश प्रदान किया।

काजरी में लहलहाया 'रेगिस्तानी सेब'

कम खर्च में शानदार मुनाफा वाली नकदी फसल है सेब

जोधपुर, (कासं)। पश्चिमी राजस्थान में केंद्रीय शुष्क अनुसंधान संस्थान काजरी द्वारा कम पानी या भारी पानी में भी नकदी फसल लेने के लिए प्रोत्साहित की गई बेर की खेती लाभदायक साबित हो रही है। किसानों के खेतों अन्य फसलों की तरह ही काजरी में विकसित बेर की किस्मों की फसल भी लहलहा रही है। काजरी द्वारा विकसित गोला किस्म के बेर को रेगिस्तान का सेब कहा जाता है। सेब का उत्पादन इस बार जोरदार हुआ है, क्योंकि पूरे पश्चिमी राजस्थान में अच्छी बारिश हुई थी। काजरी के वैज्ञानिक डॉ. धीरज सिंह बताते हैं कि हमारे यहां 40 से ज्यादा बेर की किस्मों का संग्रह किया गया है। नई किस्मों पर भी काम चल रहा है। गोला बेर का पेड़ 50 से 70

■ काजरी द्वारा विकसित गोला किस्म के बेर को रेगिस्तान का सेब कहा जाता है, सेब का उत्पादन इस बार जोरदार हुआ है, क्योंकि पूरे पश्चिमी राजस्थान में अच्छी बारिश हुई थी

किलो फल एक सीजन में देता है। उन्होंने बताया कि पश्चिमी राजस्थान के किसान अपनी रोजमर्रा की खेती के साथ-साथ बेर का उत्पादन करने लगे हैं। खेत के अलग-अलग हिस्सों में बेर के पेड़ लगाया जा सकते हैं। 3 वर्ष के बाद पेड़ फल देना शुरू कर देते हैं। उन्होंने बताया कि किसान द्वारा सामान्य खेती की सिंचाई से ही बेर के पेड़ को पानी मिल जाता है। इसके अलावा एक बार पेड़ लगाने के बाद बारिश के पानी से ही हर साल फल प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए

अतिरिक्त खर्च नहीं करना पड़ता, बल्कि किसान हर वर्ष अतिरिक्त आमदनी ले सकता है।

बेर की फसलों पर सर्वाधिक शोध जोधपुर काजरी में हुआ है, जिससे देश के किसानों के लिए कई किस्में विकसित की गई हैं, जो कम पानी में पमपती हैं, जिसका फायदा किसानों को होता है। इन दिनों यहां पर कश्मीरी सेब नामक किस्म पर काम चल रहा है। काजरी अब तक 42 किस्म के बेर उत्पादित कर चुका है। बेर उत्पादन में सबसे पहले गोला बेर

आता है। आगे धीरे-धीरे एप्पल, टिकडी, इलायची व थाई एप्पल का फल आएगा। गोला के अलावा प्रमुख रूप से पश्चिमी राजस्थान में सेब, कैथली, छुहारा, दंडन, उमरान, काटा, टिकडी, इलायची व थाई एप्पल जनवरी से मार्च तक बाजार में बिकते हैं।

काजरी के वैज्ञानिक बताते हैं कि बड़-छोटी जोत के किसान अपने खेत के चारों तरफ 20-30 पेड़ लगाकर हर साल 30 से 45 हजार रुपये की अतिरिक्त आय कर सकते हैं। छोटी जोत के किसान बेर का बगीचा लगा सकते हैं। दिसंबर से मार्च तक बेर की फसल आती है। पश्चिमी राजस्थान में एक हजार एकड़ से ज्यादा क्षेत्र में किसान अभी बेर की खेती करते हैं।

आरपीएससी में पदोन्नति समिति की बैठक हुई

अजमेर, (कासं)। राज. लोक सेवा आयोग में संस्कृत शिक्षा विभाग के पदेनति समिति की बैठक आयोजित की गई। आयोग सदस्य प्रो. अय्यब खान की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में विभिन्न पदों पर पदेनति के 992 प्रकरणों पर चर्चा की गई। बैठक में उपनिदेशक, संभागीय संस्कृत शिक्षाधिकारी, प्रधानाचार्य (वरिष्ठ उपाध्याय विद्यालय), प्राध्यापक (विभिन्न विषय) और वरिष्ठ अध्यापक (विभिन्न विषय टीएसपी एवं नॉन टीएसपी) के पदों पर पदेनति के मामलों को शामिल किया गया। बैठक में शासन सचिव संस्कृत शिक्षा, नैटम, महर्षि एयदान संस्कृत वि.वि. की रजिस्ट्रार एवं कार्मिक विभाग की प्रतिनिधि प्रिया भांगव, आयुक्त संस्कृत शिक्षा राज. प्रियंका जोधावत सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।